कृष्ण साहित्य का सामाजिक आदर्श

प्रधान संपादक :

डॉ. अशोक कुमार मूँधड़ा

संपादक :

डॉ. अशोक कुमार द्विवेदी

कृष्ण साहित्य का सामाजिक आदर्श

प्रधान संपादक :

डॉ. अशोक कुमार मूँधड़ा

संपादक :

डॉ. अशोक कुमार द्विवेदी

सह–संपादक मंडल :

डॉ. सुनील पाटिल

डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी

डॉ. कुमार अभिषेक

डॉ. प्रवीण कुमार मिश्र

हिन्दी विभाग शिफ्ट 2,
द्वारका दास गोवर्धन दास वैष्णव कॉलेज
अरूम्बाक्कम, चेन्नई – 600106.

प्रकाशक :

बोध प्रकाशन

35, वालटैक्स रोड, चेन्नई – 600079.

ISBN : 978-93-82380-18-4

कृष्ण साहित्य का सामाजिक आदर्श
Krishna Sahitya ka Samajik Adarsh

Chief Editor : **Dr. Ashok Kumar Mundhra**
Editor : **Dr. Ashok Kumar Dwivedi**

Edition : November 2023

Price : ₹ **450**

Published by :
BOADH PRAKASHAN
35, Walltax Road, Chennai - 600079.

Printed by :
RACHANA
35, Walltax Road, Chennai - 600079.

Typesetting by :
Vivek Agarwal, Bengaluru.

अनुक्रमणिका

1. श्रीमद्भगवद्गीता में चित्रित आदर्श
डॉ. बी. संतोषी कुमारी 23

2. कृष्ण काव्य धारा में कृष्ण का महत्व
डॉ. डी. जयभारती 28

3. नरसी के कृष्ण
डॉ. हर्षलता वी शाह 31

4. महाभारत के युग प्रवर्तक श्रीकृष्ण
डॉ. कुमार अभिषेक 35

5. महाकवि सूरदास के काव्य में भावपक्ष एवं कलापक्ष - एक अवलोकन
डॉ. मनोज कुमार सिंह 39

6. श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण के दस सामाजिक आदर्श
डॉ. मनोज कुमार द्विवेदी 44

7. कृष्ण साहित्य के सामाजिक आदर्श
डॉ. मिथलेश सिंह 48

8. कृष्ण साहित्य के सामाजिक आदर्श
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन 52

9. कृष्ण साहित्य के सामाजिक आदर्श
डॉ. प्रवीण कुमार मिश्र 55

10. कृष्ण साहित्य के सामाजिक आदर्श
डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन 58

11. कृष्ण साहित्य के सामाजिक आदर्श
डॉ. एस मुत्तु कुमार 61

12. कृष्ण साहित्य के सामाजिक आदर्शों का शैक्षिक पहलू
डॉ. सरोज सिंह 64

कृष्ण साहित्य के सामाजिक आदर्श

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
वेल्स विश्वविद्यालय

साहित्य मानव जीवन का आईना है। समाज में आदर्श स्थापित करने का एक सक्षम और सशक्त माध्यम है साहित्य। साहित्य के माध्यम से हमें किसी भी काल में व्याप्त जीवन शैली, जीवन मूल्य, युग धर्म आदि की जानकारी उपलब्ध होती है। साहित्य अपने जीवन को सुधारने के लिए सटीक रास्ता प्रदान करता है। इसमें द्विवेदी युग के कवि सम्राट बहुमुखी प्रतिभावान अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध कृत 'प्रियप्रवास' युगानुरूप परिवर्तन और आदर्श स्थापित करने में अत्यंत सक्षम और सफल रचना है। प्रियप्रवास का कथानक युग आराध्य श्री कृष्ण की, महती चरित्र गाथा 'श्रीमद्भागवत' के दशम स्कंध पर आश्रित अत्यंत लघु काय है। श्री कृष्ण के मथुरा प्रस्थान से समस्त गोकुल शोक सागर में डूब जाता है। कविवर अपने काव्य कौशल व प्रतिभा से इस कथावस्तु का विस्तृत व संयोजित रूप प्रदान किया है। यह मात्र शब्दों के धनी, कवि सम्राट हरिऔध से ही संभव है। इस काव्य में हरिऔध जी ने मानव जीवन के सभी पहलुओं को अनायास अपनाकर आदर्श माता, पिता, पुत्र, प्रेयसी, नेता, सखा आदि के आदर्श रूप स्थापित किए हैं। इसमें कृष्ण के लोक मंगल की कामना, सुधारवादी दृष्टिकोण, शिक्षा की महिमा, प्राणियों के प्रति प्रेम एवं सेवा की भावना, कर्तव्य परायणता, आदि का मनोरम चित्रण है। राधा द्वारा वृद्धों की सेवा, विश्व बंधुत्व की भावना, सुख शांति पूर्ण समाज के निर्माण में सहयोग सिद्ध प्रतीत होता है।

कृष्ण के विभिन्न रूपों में हमें सामाजिक आदर्श प्राप्त है। कृष्ण के आदर्श नेता का चित्र प्राप्त है। श्री कृष्ण 'प्रिय प्रवास' के नायक हैं।

आदर्श नेता या राजा : आदर्श नेता या राजा वही है जो लक्ष्य की ओर हमें ले जाने में समर्थ और सक्षम है। आदर्श नेता सामान्य मानव से अधिक बलिष्ठ, बुद्धिमान, चतुर, वीर ,सदैव प्रजा की रक्षा व सुरक्षा करने में तत्पर रहें। कृष्ण के इस गुण का परिचय हमें प्रियप्रवास के विभिन्न प्रसंगों में देखने को मिलता है। आदर्श नेता मात्र शब्दों के धनी ना होकर उचित समय पर अपने प्राण को दांव पर लगाकर अपनी प्रजा व प्रदेश की रक्षा करता है। दावनि प्रकरण में कृष्ण अपने

प्राण दांव पर लगाकर गोकुल वासियों की रक्षा करते हैं। हरिऔध के शब्दों में –

समिप जाके बलभद्र बंधु ने। वहां महा भीषण कांड जो लखा।
प्रवीर है कौन त्रिलोक मध्य जो। स्व नेत्र से देख उसे ना कांपता।

यह कांड श्याम को। सभी लगे आदर में सराहने।
(हरिऔध, प्रियप्रवास सर्ग 11- -76-96, हरिऔध ग्रंथावली-2, पृष्ठ संख्या 178)

आदर्श नेता आपातकाल में उपदेश ना देकर और हम प्रजा पर हुकुम नहीं चलाते हैं। अपने अधिकार का दुष्प्रयोग कतई नहीं करते। अपने प्राण की परवाह किए बिना स्वयं रणभूमि में कूदकर अपनी प्रजा की रक्षा करना ही आदर्श नेता के लक्षण है।

आदर्श नेता के स्वभाव पर भी कविवर हमें परिचय देते हैं। सदियों से यही परंपरा रही है कि राजा सदैव प्रतिष्ठित वर्ग का ही ख्याल रखते हैं। अथवा उनके कथन को महत्व देते हैं। उनके इशारों पर नाचते हैं। उनकी इच्छा पूर्ति हर हाल में हो जाती है। निर्धन शोषित वर्ग के प्रति ध्यान नहीं देते हैं। लेकिन प्रियप्रवास के कृष्ण अत्यंत मधुर स्वभाव के हैं। वे दीनबंधु, सबके प्यारे हैं। सबके ख्याल करते हैं। हरिऔध के शब्दों में –

बातें बड़ी सरस थे कहते बिहारी। छोटे बड़े सकल का हित चाहते थे।
अत्यंत प्यार दिखला मिलते सब से। वे थे सहायक बड़े दुख के दिनों में।।
(हरिऔध, प्रियप्रवास सर्ग 12- -80, हरिऔध ग्रंथावली-2, पृष्ठ संख्या 191)

नेता वास्तविक रूप में प्रजा के रक्षक हैं। इसे कविवर यूं कहते हैं –

जन प्रपीड़ित होकर अन्य से। शरशण है कहता नवनाथ की।
यदि नी पीड़न भूपति ही। जगत में फिर रक्षक कौन है?
(हरिऔध, प्रियप्रवास सर्ग 3- -67, हरिऔध ग्रंथावली-2, पृष्ठ संख्या 82)

हरिऔध जी सदैव यही कामना करते हैं कि राजा व प्रजा के बीच परस्पर संवाद और सहकारिता हो जाए। प्राकृतिक आपदा से पीड़ित लोगों को सटीक समय में राहत प्राप्त हो जाए।

उक्त संकट से उन्हें तत्काल मुक्ति प्रदान किया जाए, तभी देश प्रगति की ओर निर्विघ्न रूप से अग्रसर हो सकता है।

कविवर यह भी कहते हैं कि आदर्श नेता विशिष्ट पद के पीछे नहीं भागते हैं। उनकी काबिलियत से स्वयं वे पद के अधिकारी बन जाते हैं। कवि के शब्दों में –

यूं ही विशिष्ट पद गौरव की उपेक्षा। देती नितांत उनके चित्र को व्यथा थी।

(हरिऔध, प्रियप्रवास सर्ग 12- -64, हरिऔध ग्रंथावली-2, पृष्ठ संख्या 191)

जननायक : आदर्श नेता से दीनबंधु, पतित सेवा की अपेक्षा रहती है। प्रियप्रवास के नायक वैसे ही हैं।

थे राजपूत्र उन्हें पद ना था ना तो भी। वे दीन के सदन थे अधिकांश जानते थे।

औ थे विमोचन उसे करते कृपा से।। रोग दुखी विपद आपद।

सेवा सदन करते निज हंसत से थे। ऐसा निकेत ब्रज में न मुझे दिखाया।

(हरिऔध, प्रियप्रवास सर्ग 12- 86,87, हरिऔध ग्रंथावली-2, पृष्ठ संख्या 192)

नेता को सभी वर्ग के विकास में समान दृष्टि रखना अनिवार्य है। तभी जनसाधारण नेता या शासक को अपने ही परिवार के सदस्य मानेगा। नेता-प्रजा के बीच में पारस्परिक संपर्क में कोई दिक्कत नहीं होना चाहिए। तभी वह जननायक बनकर देश पर ही नहीं प्रजा के उर पर भी सदा सदा के लिए राज कर सकता है।

निसंदेह प्रियप्रवास के कृष्ण अपने गुणों के कारण जननायक है। कवि के शब्दों में -

संतान हींन जन तो व्रज बंधु को पा। संतान वन निज को कहते रहे ही की।

संतान वान जान भी व्रत हीं का । संतान से अधिक थे रखते भरोसा ।।

हरिऔध, प्रियप्रवास सर्ग 12- 88, हरिऔध ग्रंथावली-2, पृष्ठ संख्या 192

जब नेता जननायक बन जाता है तब नेता का प्रत्येक कार्य अनुकरणीय बन जाता है। समाज में सुख शांतिपूर्ण वातावरण बरकरार रखने में यह सहायक सिद्ध होगा। अर्थात कवि आदर्श शासक के लक्षण गोपियों द्वारा व्यक्त करते हैं। यदि नेता-प्रजा दोनों एक दूसरे के प्रति आपसी प्रेम व अटूट विश्वास आदि रख तो वहां आत्मीयता और सौहार्द का भाव, मन मन में राज करेगा।

लोकमंगल का मूल आधार की भूमिगत जीवों के प्रति करुणा की भावना व्यक्त करना। यदि मानव अपनी स्वार्थता छोड़कर यह सोचे कि इस विश्व के प्रत्येक जीव जंतु को जीने का समान अधिकार है, तो समग्र भूमंडल आनंदमई कुंज बन जाएगा । विश्व कल्याण की स्थापना अपने आप हो जाएगी।

हरिऔध के प्रियप्रवास एक खुली तिजोरी है जो जिसे चाहे उसे लेकर अपने जीवन को सवार सकते हैं।